P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्राचीन भारतीय इतिहास में स्तूप का अर्थ तथा उसका उदय (वैदिक युग से लेकर बौद्ध काल तक)

कुमार प्रमोद
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान

सारांश

प्राचीन भारतीय इतिहास में स्तूप का उदय कहां से हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ और कब हुआ यह एक विचारणीय बिन्दू है जब तक हम प्राचीन भारत के इतिहास का अच्छी तरह अध्ययन नहीं कर लेते तब तक इतिहास के किसी भी छौर पर पहुंचना बड़ा मुश्किल होता है बहुत सारे विद्वान स्तूप नाम सुनते ही या पढ़ते ही उसे बौद्ध कला से जोड़ते है जो कि सही नहीं है। स्तूप का सर्वप्रथम उल्लेख वैदिक काल से मिलना आरम्भ होता है। वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक और सांसारिक वैभव को प्रकट करती है वैदिक युग में मानवता के सर्वश्रेष्ठ गुणों को धर्म का आवश्यक अंग माना जाता था और समस्त धार्मिक कार्यों का उद्देश्य आगे चलकर मोक्ष प्राप्त करना हो गया जैसे ही व्यक्ति ने मोक्ष का अर्थ समझा उसने अपने जीवन को पुण्य प्राप्त करने हेतु लगा दिया जिसमें तीर्थ यात्रा, पूजा–पाठ, दान और भवन निर्माण भी था और यही भवन निर्माण विधि स्तूप निर्माण कला में प्रकट हुई। अब प्रश्न आता है कि स्तूप का अर्थ क्या है? तो बड़े ही सरल शब्दों में इसका अर्थ होता है मृत व्यक्ति की भस्म को इकट्ठा करके किसी पात्र में रखकर उस पर इटों या पत्थरों से निर्माण किया जाता है और जो दुर से टीले के समान नजर आता है उसे स्तूप कहते है। ऋग्वेद में इसका अर्थ थुहा या ढेर होता है। यही कालान्तर में बौद्ध धर्म का प्रधान स्मारक बन गया और धार्मिक प्रवृत्तियों के सशक्त प्रवाह के कारण स्तूप का विविध स्परूप सामने आने लगा।

मुख्य शब्द : स्तूप, चैत्य, थूप राशिकृत, श्मशान, अस्थिमुंभ, परिधि, भग्नावशेष, अनग्निदग्धा, तूदाकर।

प्रस्तावना

भारतीयों की धर्म परिधि हमेशा से विशालकाय रही है। भारत के धर्म का आदर्श समाज के लोगों की वस्तुओं को सहसबंद्ध करता रहा है। प्राचीन काल में मनुष्यों के श्रेष्ठ गुण भारतीय धर्म के आदर्श अंग स्वीकार किये गये जाते थे। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक मानव के जीवन का अन्तिम स्वप्न मोक्ष प्राप्त करना रहा है। मनुष्य द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्य उसके आध्यात्मिक क्षैत्र को उपयोगी बनाते है। मानव का धार्मिक दृष्टिकोण उसे ऐसे कार्य करने की प्रेरणा देता है, जिससे वह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सके। मनुष्य अपने जीवन को समय–समय पर प्रेरणा देने हेतु इस प्रकार के भवनों का निर्माण करता है जिनके द्वारा वह अपनी धार्मिक भावना में अभिवृद्धि कर सके। भारतीय कला धार्मिक विचारों से ओत–प्रोत रही है। कभी–कभी मानव सांसारिक वैभव के कारण ऐसा कार्य पूर्ण कर देता है जो मानसिक विचारधारा को प्रकट करते हुए आंतरिक सुख अथवा आत्म गौरव का एक अनोखा अनुभव दे जाता है।[1] भारतीय संस्कृति के आदिकाल से ही मानव ने अनेक प्रकार के शिल्पों की रचना की है, उसके द्वारा सबसे पहले बनाई गई निर्मित वस्तुएं मिट गई। अन्वेषण करने पर प्राचीन वास्तुकला के कुछ अवशेष प्रकट हुये ये अवशेष बौद्ध मत से सम्बन्धित है परन्तु इनकी वैदिक परम्परा भी है। अगर हम यहां स्तूप की बात करें तो यह कहना यथार्थ होगा कि वैदिक संस्कृति में स्तूप का उदय प्रकट होता है जो कालान्तर में बौध धर्म का प्रधान स्मारक बन गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राचीन धार्मिक स्थिति को जानने के लिये आवश्यक।
2. अर्थ को समझने के लिये आवश्यक।
3. निर्माण कार्य को जानने के लिए जरूरी।
4. मनुष्य के भय को जानने हेतु।

5. वैदिक संस्कृति ओर बौद्ध संस्कृति की समरूपता का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु।

स्तूप का अर्थ चैत्य

भारत की वास्तुकला में प्राचीन स्तूप माने गये है स्तूप संस्कृत के स्तूपः या प्राकृत थूप 'स्तूप' धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है एकत्रित करना या ढेर लगाना। मिट्टी के ऊंचे टीले को स्तूप का रूप दिया जा सकता है, अमर कोश में 'राशिकृत मृतिकादि' उसी कथन को पुष्ट करता है।[2] साधारणतया स्तूप का सम्बन्ध बौद्धमत से लिया जाता है। दीघनिकाय,[3] अगुत्तर निकाय[4] और मझिमनिकाय[5] में 'थूप' शब्द का प्रयोग बार–बार किया गया है। जैसे :– कसपस्य भवगतो द्वादस योजनिकान् कानक थूपिका। अगर जातकों[6] को पढ़ा जाये तो यहां भी 'थूप' शब्द को किसी ऊंचे टेले या स्मारक से सम्बोधित किया गया है। प्राचीन शिक्षा नगरी तक्षशिला के एक अभिलेख में स्तूप स्थापना का विवरण मिलता है। मंरिखेन सम्यकेन थूवो प्रतिस्तवितो [7]

विद्वानों की अपनी–अपनी धारणा है कुछ विद्वान स्तूप शब्द को अंग्रेजी के शब्द टुम से निकला मानते है जिसका अर्थ टुम्ब है। व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसके शव को भूमि में दबा दिया जाता है जो धीरे–धीरे नष्ट हो जाता है वही अगर उस मृत व्यक्ति का शरीर को जलाकर उसकी भस्म को प्रतिष्ठापित किया जाये और उस पर एक स्मारक बना दिया जाये तो वह पुण्य स्थान बन जायेगा। ठीक यही प्रक्रिया स्तूप के रूप को लेकर प्रकट हुई। ऐसा माना गया है कि स्तूप के स्थान में पवित्रता की भावना और अशुद्ध से रक्षा करने की इच्छा निहित होती है। स्तूप के लिए चैत्य शब्द का प्रयोग साहित्य में उपलबध है। चैत्य शब्द 'चि' चयने धातु से निकला है क्योंकि इसमें पत्थर का प्रयोग या ईंट का प्रयोग करके भवन का निर्माण किया जाता है। साथ ही साथ इस भवन में रखने वाली सामग्री जिसमें भस्मादि पवित्र पदार्थ होते है उनकी बटोरने की क्रिया चयन कहलाती है। अतः चैत्य से उस स्थान का संकेत प्रकट होता है जहां पर चयन–क्रिया सम्पन्न की जाती है। चैत्य शब्द का अर्थ 'चित' तथा 'चिता' से भी सम्बन्धित है। चिता की राख को इकट्ठा करके एक पात्र में रखा जाता है और उस पर स्मारक बना दिया जाता है जिसे स्तूप के नाम से जाना जाता है। रामायण के काल को पढ़ा जाये तो रामायण में श्मशान भूमि की तुलना चैत्य से की गई है जहां पर दिवंगत महापुरूषों या नृपतियों की स्मृति में चैत्य नाम से स्मारक बनाये जाते थे। इसलिए स्तूप और चैत्य का तुलनात्मक विवेचन और उनका उल्लेख यत्र–तत्र मिलता है। अवशेष से सम्बन्धित भवन प्रत्यक्ष रूप में स्तूप कहलाता है उस भावना का स्वरूप चैत्य भी माना जा सकता है, लेकिन चैत्य में अवशेष की कल्पना व स्तूप में वह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है। इसी कारण अमरावती के लेखों में स्तूप को चेतिय या महाचेतिय कहा गया है। अगर सारांश की बात करें तो अवशेष या भस्म से चैत्य का सीधा सम्बन्ध है इसलिए स्तूप को चैत्य का पर्यायवाची शब्द माना जा सकता है। अगर दोनों के बीच अन्तर देखा जाये तो चैत्य पर्वत गुफाओं में खोदा या तैयार किया जाता है। जिसमें स्तूप का आकार वर्तमान रहता है मगर उसमें अवशेष रखने का प्रश्न नहीं आता। वह बौद्ध मत का प्रतीक है इसलिए चैत्य शब्द का प्रयोग बौद्धों ने किया। परन्तु स्तूप के भीतरी भाग में पात्र में मृत पुज्य व्यक्ति के अवशेष स्थापित कर भवन का निर्माण किया जाता है और इसकी स्थापना पर्वतों से अलग होकर समतल भूमि पर की जाती है तथा इसे बनाने हेतु ईंट और पत्थर का प्रयोग किया जाता है तो यह स्तूप कहलाता है। साधारण गुफाओं की आकृति स्तूपाकार होती थी और उनको भी चैत्य कह कर पुकारा जाता था।[8]

वैदिक एवम् बौद्ध कालीन स्तूप

बौद्धों से पूर्व की बात करें तो हमें यह आश्चर्य होगा कि स्तूप कला का उद्भव उनसे पहले वैदिक काल में हो चुका था। स्तूप की ऐतिहासिक परम्परा वैदिक काल में पाई जाती है। वेदों में प्रथम ऋग्वेद में मृत व्यक्ति को अग्नि से जलाना या पृथ्वी में शव को गाड़ने का विवरण मिलता है। यहां एक शब्द मिलता है 'अनग्निदग्धा' जिसे वैदिक सभ्यता के लोग स्मारक के लिये प्रयोग करते थे।[9] इस शब्द से यह पता चलता है कि उस काल के लोग शव को धार्मिक रीति से वस्त्र सहित भूमि में गाड़ देते थे सम्भवतः भूमिगृह शब्द शव को भूमि में रखने का द्योतक है।[10] मरे हुये व्यक्ति के शव के साथ भूमिगृह में अनेक वस्तुएं रखी जाती थी जिसका वो हमेशा प्रयोग करता था एक जगह मृत व्यक्ति के हाथ में धनुष रखने का उल्लेख प्राप्त होता है।[11] ऐसा उल्लेख मिलता है कि उस काल में मृत व्यक्ति के शव को भूमि में गाड़ कर उसकी समाधि पर एक तूदाकार इमारत बनाई जाती थी [12] और उस तूदाकार इमारत को परिधि द्वारा घेर लिया जाता था उनका मानना था कि ऐसा करने से शव की पवित्र भूमि को संसार के अपवित्र वातावरण से पृथक रखा जा सकता है। बाद में उस परिधि को वेदिका नाम दिया गया। चारो वर्णों के लिए विभिन्न आकार के शव टीलों का उल्लेख प्राप्त होता है।[13] भूमि में शवों को जब गाड़ा जाता था तो मन्त्रों का उचारण भी होता था[14] आश्वलायन गृहसूत्र में अस्थिमुंभ में शव की जली अस्थित या राख को रखकर पृथ्वी में गाड़ देने और उस पर ऊंचा टीला बनाने का विवरण मिलता है। [15] भारतीय इतिहास की यह वैदिक परम्परा विदेशों में भी फैली जैसे बेबिलोन यहां के एक स्थान निपुर जहां से एक विशाल समाधि स्थान मिला है जिसमें अनेक भस्मघर गाड़े हुए पाये गये इनमें से कुछ भस्मघर ई.पू. 3000 वर्ष के है। डॉ. काणे का मानना है कि मृत शरीर का दाह संस्कार चार चरणों में पूर्ण किया जाता था।

1. शव को जलाना
2. राख का संग्रह
3. अस्थिमुंभ में शव की जली अस्थि या राख को रखना और
4. स्मारक बनाना।

इस प्रकार स्तूप या स्मारक बनाने का कार्य उस वैदिक सिद्धान्त का बौद्धकालीन स्वरूप था।[16]

भारत में वैदिक स्तूपों की परम्परा थी। यद्यपि उनके भग्नावशेष कम संस्था में उपलब्ध है एक हिरण्य स्तूप का विवरण भी प्राप्त होता है। नीलकंठ शास्त्री ने यह विचार व्यक्त किया है कि प्राचीन युग में चैत्य के

पश्चात् स्तूप की पूजा धार्मिक जगत् में आरम्भ हुई ऐसा उल्लेख है संघ के लोग उनका समान करते थे। महापरिनिब्बान सूत्त में उल्लेख की चक्रवर्ती राजाओं की समाधि पर स्तूप बनाए जाते है। उसी प्रकार का स्तूप उनकी अर्थात् भगवान बुद्ध की समाधि पर निर्मित होना चाहिए जो चौराहे पर स्थित हो इस कथन से स्पष्ट प्रकट हो गया कि वैदिक युग की प्रथा को बौद्धों ने अपनाया।

वैदिक युग के बाद भगवान बुद्ध के अवशेषों पर अनेक स्तूप बनाये गये जो उनकी मान्यता एवं लोकप्रियता को प्रकट करते है। अभिलेखों में इन्हें शरीर या धातु गर्भ कहा गया है। अवशेषों पर अनेक स्तूप बने जो पूजा का विषय रहे जैसे –शारीरिक स्तूप, पारियोगिक स्तूप, उद्देशिक स्तूप और संकल्पित स्तूप। महान सम्राट अशोक ने भी अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया दिव्यावदान में उल्लेख है कि उसने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था उसके प्रसिद्ध स्तूपों में भरहुत स्तूप, बोधगया स्तूप, सांची स्तूप समूह है।[17] उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले में पीपरावा नामक स्थान पर एक स्तूप स्थित है जो ईसा पूर्व चौथी सदी का है उस पर एक धातु पात्र प्रकाश में आया है जिस पर प्राकृत भाषा में एक लेख खुदा है इदं शरीरं निधानं बुद्धस्य भगवतः शाक्यानाम्!

स्टेन कोनाट नामक विद्वान ने अनेक लेखों का उदाहरण दिया जिनमें शरीर के अवशेषों को स्तूप में रखने का वर्णन है। [18]

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण प्राचीन भारतीय इतिहास में स्तूप का अर्थ तथा उसका उदय वैदिक युग से लेकर बौद्ध काल तक में स्पष्ट होता है कि भारत में स्तूप निर्माण कला का जन्म बौद्ध काल में न होकर वैदिक काल में हुआ और बौद्धों ने यह कला वैदिक लोगों से ग्रहण की उपरोक्त विवरण में एक अच्छी बात निकल कर सामने आई जो स्तूप निर्माण कला को वैदिक काल की जननी बतलाती है और वो है भगवान बुद्ध द्वारा खुद अपने कथन के माध्यम से आनन्द को कहना है कि आनन्द यहां चक्रवर्ती राजाओं की समाधि पर स्तूप बनाये जाते है। अब प्रश्न यह उठता है कि ये स्तूप बनाये क्यों जाते थे तो हमने प्रस्तावना में सर्वप्रथम इस बात का उल्लेख किया है कि मनुष्य के जीवन दर्शन की अन्तिम सीढ़ि मोक्ष प्राप्ति थी वो धर्म के अधीन होकर प्रत्येक कार्य करता था अपने आदर्श व्यक्तियों की पूजा हेतु और उनसे पुण्य प्राप्त करने हेतु स्तूपों का निर्माण आरम्भ किया उसका मानना था कि स्तूपों में रखे मृत व्यक्ति या आदर्श व्यक्ति के भस्म अवशेष उसके कल्याण के लिये लाभकारी है। उस काल के लोगों का मानना था कि स्तूप की स्थापना करना धर्म का कार्य है और स्तूप पूजा से पुण्य मिलेगा। वैदिक कालीन और बौद्ध कालीन परिपाटी वर्तमान में भी जिन्दा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *उपाध्याय, वासुदेव :– प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर, पृ.सं. 03, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना संस्करण चतुर्थ जु. 2008*
2. *अमरकोश 3/5/19 – ''राशिकृत मृतिकादि''*
3. *दीधतिकाय 2/142 – थूप*
4. *अंगुतर निकाय 1/177 – थूप*
5. *मझिमनिकाय 2/244 – थूप*
6. *जातक 3/156, 3/99/116 – थूप*
7. *कारपस इंस्कुपेशनं इडिकेरम् भाग 02 सं. 02*
8. *उपाध्याय, वासुदेव :– प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर, पृ. सं. 04, 05*
9. *ऋग्वेद 7/8/9/1/10/18/8 – अनग्निदग्धा (स्मारक)*
10. *अथर्ववेद 5/3/14 भूमिगृह (पृथ्वी में घर)*
11. *वैदिक इंडेक्स भाग 1, पृ.सं. 8*
12. *यजुर्वेद मन्त्र 35/15 (इमं जीवेभ्यः परिधि दधामि मैषांन गादपुरों अर्थमेतम्)*
13. *शतपथ ब्राह्मण 13/8/3/11 (विभिन्न टीलों का उल्लेख)*
14. *वाजसनेयी संहिता 18/1/3 (मन्त्रों का उल्लेख)*
15. *आश्वलायन गृहसूत्र 4/5 (अस्थिमुंभ – अवशेष पात्र)*
16. *धर्मशास्त्र का इतिहा, भा 4, पृ.सं. 255*
17. *चौबे, सौरभ – प्राचीन भारत, पृ.सं. 296, यूनीवर्सल बुक्स इलाहाबाद, संस्करण द्वितीय ज. 2017*
18. *कारपस इंस्कुपेशनं इडिकेरम् भाग. 2, पृ.सं.– 115, 128*